खण्ड-166, अंक-1
सोमवार, 8 फाल्गुन, शक संवत् 1877
(27 फरवरी, 1956 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 166 में 5 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९५६

मूल्य : बिना महसूल 4 आने, महसूल सहित 5 आने |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

LEGISLATURE LIBRARY
25 JUL 1956

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, २७ फ़रवरी, १९५६

विधान सभा की बैठक सभा-मन्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्यों की सूची (२७३)

अक्षयवर सिंह, श्री
अर्जीज़ इमाम, श्री
अनन्तस्वरूप सिंह, श्री
अमरेशचन्द्र पाँडेय, श्री
अमृतनाथ मिश्र, श्री
अली ज़हीर, श्री सैयद
अवधेशचन्द्र सिंह, श्री
अवधेशप्रताप सिंह, श्री
आशालता व्यास, श्रीमती
इरतज़ा हुसैन, श्री
इसरारुल हक़, श्री
उदयभान सिंह, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उमाशंकर मिश्र, श्री
उम्मेदसिंह, श्री
उल्फ़तसिंह चौहान निर्भय, श्री
ऐजाज़ रसूल, श्री
ओंकारसिंह, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह, श्री
कमाल अहमद रिज़वी, श्री
करनसिंह, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण टंडन, श्री
किन्दरलाल, श्री
किशनस्वरूप भटनागर, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
कृष्णचन्द्र शर्मा, श्री
केवलसिंह, श्री
केशभान राय, श्री
केशव पाँडेय, श्री
कैलाशप्रकाश, श्री
ख्यालीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गजेन्द्रसिंह, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद पाँडेय, श्री
गुरुप्रसाद पाँडेय, श्री
गुलजार, श्री
गेंदासिंह, श्री
गोवर्धन तिवारी, श्री
गौरीराम, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चन्द्रवती, श्रीमती
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चन्द्रहास, श्री
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल पालीवाल, श्री
चुन्नीलाल सगर, श्री
छेदालाल, श्री

जगदीशशरन रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जयपाल सिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
ज्वालाप्रसाद सिन्हा, श्री
झारखंडेराय, श्री
टीकाराम, श्री (बदायूं)
टीकाराम, श्री (हरदोई)
तुलाराम, श्री
तुलाराम रावत, श्री
तेजप्रताप सिंह, श्री
तेजबहादुर, श्री
त्रिलोकीनाथ कौल, श्री
दयालदास भगत, श्री
दर्शनराम, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दातारांम, श्री
दीपनारायण वर्मा, श्री
देवकीनन्दन विभव, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवनन्दन शुक्ल, श्री
देवराम, श्री
द्वारकाप्रसाद मित्तल, श्री
द्वारिकाप्रसाद पाँडेय, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
नरदेव शास्त्री, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तम सिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वर द्विवेदी, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायणदास, श्री
नारायणदीन वाल्मीकि, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेत्रपाल सिंह, श्री
नौरंगलाल, श्री
पद्मनाथ सिंह, श्री
परमेश्वरी दयाल, श्री
परिपूर्णानन्द वर्मा, श्री
पहलवानसिंह चौधरी, श्री
पातीराम, श्री
पुत्तूलाल, श्री
पृथ्वीराम, श्री
पुलिनबिहारी बनर्जी, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतिपाल सिंह, श्री
प्रभुदयाल, श्री
फ़ज़लुलहक़, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बनारसीदास, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवन्तसिंह, श्री
बशीर अहमद हकीम, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बाबूलाल कुमेरा, श्री
बिशम्बरसिंह, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीसिंह, श्री
बैजनाथ प्रसाद सिंह, श्री
बैजूराम, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे, श्री
भगवानदीन वाल्मीकि, श्री
भीमसेन, श्री
भुरजी, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोलासिंह यादव, श्री
मक़बूल आलम खां, श्री
मथुराप्रसाद तिवाड़ी, श्री
मथुराप्रसाद पाँडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदनमोहन उपाध्याय, श्री
मन्नीलाल गुप्त, श्री
मलखानसिंह, श्री

महमूद अली खां, श्री (रामपुर)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महादेवप्रसाद, श्री
महावीरसिंह, श्री
मिजाजीलाल, श्री
मिहरचान सिंह, श्री
मुन्नूलाल, श्री
मुश्ताक अली खां, श्री
मुहम्मद अहील अब्बासी, श्री
मुहम्मद अब्दुल लतीफ, श्री
मुहम्मद तकी हादी, श्री
मुहम्मद नबी, श्री
मुहम्मद नसीर, श्री
मुहम्मद मंजूरुल नबी, श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
मोहनसिंह शाक्य, श्री
यमुनासिंह, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
रघुराजसिंह, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
रमेश वर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजकुमार शर्मा, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजवंशी, श्री
राजाराम, श्री
राजाराम मिश्र, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रदत्त, श्री
राधामोहन सिंह, श्री
रामअधीन सिंह यादव, श्री
रामअनन्त पाँण्डेय, श्री
रामअवध सिंह, श्री
रामआसरे वर्मा, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामगुलाम सिंह, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदास रविदास, श्री
रामदुलारे मिश्र, श्री
रामनारायण त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामप्रसाद सिंह, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
रामरतन प्रसाद, श्री
रामलखन मिश्र, श्री
रामसुन्दर राम, श्री
रामसुभग वर्मा, श्री
रामसुमेर, श्री
रामसेवक यादव, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामहरख यादव, श्री
रामहेतसिंह, श्री
रामेश्वरलाल, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मी देवी, श्रीमती
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लतीफ हुसैन, श्री
लालबहादुरसिंह कश्यप, श्री
लुत्फअली खां, श्री
लेखराजसिंह, श्री
वंशनारायण सिंह, श्री
वंशीदास धनगर, श्री
वंशीधर मिश्र, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
विश्रामराय, श्री
विष्णुशरण दुब्लिश, श्री
वीरसेन, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री

वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्रशाह, राजा
व्रजभूषण मिश्र, श्री
व्रजरानी मिश्र, श्रीमती
व्रजवासीलाल, श्री
व्रजविहारी मिश्र, श्री
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शम्भूनाथ चतुर्वेदी, श्री
शाँतिप्रसन्न शर्मा, श्री
शिवकुमार मिश्र, श्री
शिवकुमार शर्मा, श्री
शिवनारायण, श्री
शिवपूजन राय, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगल सिंह, श्री
शिवमंगलसिंह कपूर, श्री
शिवराजबली सिंह, श्री
शिवराज सिंह यादव, श्री
शिवराम पाँडेय, श्री
शिवराम राय, श्री
शिववक्षसिंह राठौर, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शिवस्वरूपसिंह, श्री
शुकदेवप्रसाद, श्री
शुगनचन्द, श्री
श्याममनोहर मिश्र, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्रीनाथ भार्गव, श्री
श्रीनाथराम, श्री
सईद जहाँ नज़्क़ी शेरवानी, श्रीमती
सच्चिदानन्दनाथ त्रिपाठी, श्री
सत्यनारायणदत्त, श्री
सत्यसिंह राणा, श्री
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सावित्रीदेवी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, श्री
सियाराम चौधरी, श्री
सीताराम, डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुन्दरदास, श्री दीवान
सुन्दरलाल, श्री
सुरजूराम, श्री
सुरेशप्रकाश सिंह, श्री
सूर्यप्रसाद अवस्थी, श्री
हबीबुर्रहमान अंसारी, श्री
हबीबुर्रहमान खां हकीम, श्री
हमीद खां, श्री
हरगोविन्द सिंह, श्री
हरदयालसिंह पिपल, श्री
हरदेव सिंह, श्री
हरसहाय गुप्त, श्री
हरिप्रसाद, श्री
हरिश्चन्द्र अष्ठाना, श्री
हरिसिंह, श्री
हुकुमसिंह, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री

लोक सभा के अध्यक्ष, श्री गणेश वासुदेव मावलंकर के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मन्त्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)--अध्यक्ष महोदय, मैं ऐसा देखता हूं कि अंग्रेजी की यह कहावत कि "मिस्फार्चून्स नेवर कम सिंगिल" हमारे देश में बड़े वेग के साथ चरितार्थ होती जाती है। ऐसे समय में जब देश को इस बात की आवश्यकता थी कि हमारे एल्डर स्टेटसमेन--वे लोग जिन्होंने देश की सेवा में अपनी सारी जिन्दगी बिताई है--हमारे बीच में रहें और हम उनकी कार्यकुशलता और अनुभव से लाभ उठा सकें हमसे अलग होते जा रहे हैं। महात्मा गाँधी का देहान्त हुआ। सरदार पटेल चले गये और उस पुरानी पीढ़ी के अब दो ही चार व्यक्ति बच रहे हैं। भगवान उनको चिरायु करें।

अब ऐसा देखता हूं कि काल की कुदृष्टि दूसरी पीढ़ी के लोक सेवकों पर पड़ी है। मुश्किल से साल भर हुआ कि हमने इस सदन में श्री रफी अहमद किदवाई के निधन पर शोक व्यक्त किया था। अभी एक सप्ताह ही हुआ होगा कि आचार्य नरेन्द्रदेव हमसे छिन गये और देश के वे आँसू सूखने भी नहीं पाये थे कि आज श्री मावलंकर के देहान्त का समाचार मिला। श्री मावलंकर जी का जन्म २७ नवम्बर, १८८८ को हुआ था। मुश्किल से ६८ वर्ष की उम्र थी। १९१३ में उन्होंने वकालत शुरू की थी और थोड़े ही दिनों में वकालत में अच्छी ख्याति प्राप्त की परन्तु उनका हृदय रुपया कमाने में नहीं था। शुरू से ही सार्वजनिक कामों की ओर रुझान था और जब १९१७ में खेड़ा में किसानों का लगानबन्दी का आन्दोलन आरम्भ हुआ तो उन्होंने उसमें प्रमुख भाग लिया। जब महात्मा जी इस देश के राजनीतिक रंगमंच पर अवतरित हुये तो स्वभावतः श्री मावलंकर उनकी ओर आकृष्ट हुये और वे काँग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं में बहुत ही जल्दी गिने जाने लगे। १९२१ से २३ तक वह गुजरात की प्रादेशिक काँग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी थे और जब १९२१ में अहमदाबाद का बड़ा काँग्रेस अधिवेशन हुआ तो उस समय भी वे जनरल सेक्रेटरी थे। इसके बाद हमारे जो कई अन्दोलन स्वाधीनता के चले महात्माजी के नेतृत्व में, उनमें उन्होंने भाग लिया। १९३० से ३३ तक, १९३९ से ४० और १९४२ से ४४ तक वे जेल में रहे। इतना ही नहीं पहली बार जेल से छूटने के बाद सन् ३३ में एक साल के लिये गवर्नमेंट ने उनको रत्नागिरि में नजरबन्द करके रक्खा। वह केवल राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं थे वरन् उनको शासन का भी बहुत अच्छा अनुभव था। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी के वह बहुत दिनों तक मेम्बर थे और कई साल तक उसके ख्यातनामा प्रेसीडेंट थे, वह विधान सभाओं के काम का भी बहुत ही असाधारण अनुभव रखते थे। बम्बई की लेजिस्लेटिव असेम्बली के भी वह स्पीकर ८, ९ वर्ष, १९३७ से १९४६ तक रहे। १९४६-४७ में सेन्ट्रल असेम्बली के प्रेसीडेंट थे। १९४७ से १९५२ तक इंडियन पार्लियामेंट के स्पीकर थे और हमारे नये विधान के स्वीकृत होने के बाद १९५२ से बराबर हाउस आफ दि पीपुल के स्पीकर रहे हैं। इस सम्बन्ध में उनका जो काम था उसका हम लोगों की अपेक्षा आपको बहुत ज्यादा निजी

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[डाक्टर सम्पूर्णानन्द]

ज्ञान है। उन्होंने जिस प्रकार हाउस आफ दि पीपुल का काम चलाया है, जिस प्रकार कि उस सदन के सभी दलों के सदस्यों के वह आदर और सम्मान के पात्र थे इसको हम लोग जानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने जो एक लीक डाली उसका प्रभाव सभी प्रादेशिक विधान सभाओं और विधान परिषदों पर पड़ा है। और समय-समय पर इन विधायक संस्थाओं के अध्यक्षों और सभापतियों की बैठकों में उनके नेतृत्व में जो निश्चय हुये हैं उनके द्वारा जो परिपाटी काम चलाने की प्रस्तुत हुई वह आगे भी इन संस्थाओं के लिये मार्ग प्रदर्शन का काम करेगी।

उनकी प्रतिभा कितनी बहुमुखी थी और किन-किन कामों में उनको अभिरुचि थी विशेषरूप से उन कामों में जिनको कि देश-निर्माण से विशेष सम्बन्ध रहा है इसका अनुमान इसी बात से हो सकता है कि वह कस्तूरबा गाँधी राष्ट्रीय स्मारक निधि के चेयरमैन थे। गाँधी स्मारक निधि के चेयरमैन थे। गुजरात यूनिवर्सिटी निधि के चेयरमैन थे। उनका निधन असामयिक हुआ, इसमें कोई संदेह नहीं। यद्यपि जब पहले-पहल यह खबर मिली कि ९ फ़रवरी को उनको थ्राम्बोसिस का आक्रमण हुआ तभी से लोगों के चित्त में घबराहट पैदा हो गयी थी। किन्तु बीच में जो समाचार मिले उनसे यह विश्वास हुआ कि अब वह खतरे की मियाद को पार कर गये हैं। उनके निधन के १० घंटे पहले डाक्टर लोग एकत्र हुये और उन्होंने यह राय दी कि अब किसी किस्म का खतरा नहीं। इसलिये उनकी बीमारी के सम्बन्ध में जो दैनिक बुलेटिन बराबर निकला करती थी अब उसको निकालने की जरूरत नहीं है। लेकिन आज सबेरे उनकी हालत एकाएक खराब हुई और १५ मिनट के भीतर, ८ बजे उनका देहान्त हो गया। इस बीमारी की हालत में भी उनका हृदय किस प्रकार समवेदनापूर्ण था इसका अनुमान इस बात से हो सकता है कि आज से ४ दिन पहले उनके पुत्र श्री पुरुषोत्तम मावलंकर का मेरे पास एक पत्र आया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पिता जी को आचार्य नरेन्द्र देव जी की मृत्यु का समाचार सुन कर बहुत दुख हुआ है। लेकिन चूँकि हम लोगों को उनके घर वालों का कोई पता नहीं है इसलिये आपको लिखते हैं कि हमारी समवेदना उनके घर तक पहुंचा दें। कल वे दूसरों के साथ समवेदना प्रकट कर रहे थे आज हम उनके निधन पर शोक प्रकट करने जा रहे हैं। मैं समझता हूं इससे ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। हम लोगों को, सारे देश को उनके देहान्त का समाचार सुनकर घोर दुःख होगा। मेरा आपसे निवेदन है कि आप हम लोगों की समवेदना उनके परिवार तक पहुंचा दें।

आज उनकी स्मृति के सम्मान में सेक्रेटेरियट भी बन्द रहेगा और मेरा निवेदन यह है कि आप इस शोक प्रदर्शन की कार्यवाही के बाद इस सदन की कार्यवाही भी आज के लिये स्थगित कर दें।

***श्री गेंदा सिंह** (जिला देवरिया)--माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा कि माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा अभी हमारे आँसू सूखने भी न पाये थे तब तक एक दूसरा गहरा घाव लगा। मावलंकर जो से व्यक्तिगत तौर पर मेरा परिचय न होते हुये भी मैंने जो दूसरों से सुना है और पढ़ा है उससे मैं समझता हूं कि आज मावलंकर जी की भारतवर्ष में कितनी अधिक आवश्यकता थी। हमारी जो एक पीढ़ी है, जिस पीढ़ी के भरोसे पर कोई देश

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

गर्व कर सकता है, हमारी समझ में नहीं आता कि उस पीढ़ी को छीनने में, अब कोई एक अदृश्य शक्ति हो या कोई हो, उसको इतनी जल्दी क्यों। वह पीढ़ी जहाँ पर उसने शिक्षा-दीक्षा हासिल की थी, वह स्कूल, वह यूनिवर्सिटी इस वक्त और उसका जो चलाने वाला था वह देश में नहीं है। एक युग था जिस युग में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इस पीढ़ी ने शिक्षा प्राप्त की थी और उस विद्यालय में शिक्षा पाने वाले लोगों की कितनी आवश्यकता आज भी देश में है उसको हम आँक नहीं सकते, हम अनुमान नहीं कर सकते। यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज वे तेजी से हमको छोड़ करके जा रहे हैं। मावलंकर जी जिस वक्त यूरोप से लौटकर आये, बम्बई में आते ही उन्होंने अपनी यूरोप यात्रा की जो प्रक्रिया दी, एक वाक्य कहा था, कितनी स्वतन्त्रता, कितनी विचारों की स्वतन्त्रता मावलंकर जी में थी उससे उसकी एक झलक मिलती है। उन्होंने कहा कि पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी में बिग मेजारिटी जो है वह हार्मफुल है। अब यह एक ऐसी चीज है कि जिस पर बलात् हम लोगों को उस तरफ खिंचना पड़ता है। जब कभी दिल्ली में जाया करता था तो अवश्य में एक दो घंटे का समय निकालकर पार्लियामेंट की कार्य-वाही देखने की कोशिश करता था। मेरी व्यक्तिगत तौर पर कितनी श्रद्धा थी मावलंकर जी में और वहाँ के पार्लियामेंट के मेम्बरों से जो कुछ सुनने को मिलता था उससे ऐसा लगता था कि चाहे वह किसी दल के भी हों, सभी दलों के लोगों की श्रद्धा मावलंकर जी के प्रति बराबर थी। अध्यक्ष महोदय, एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता आज हमारे देश में जितनी है शायद उतनी दूसरे देशों में न हो, इसको भी मैं मान सकता हूं। हमारा देश एक नया रास्ता सारे संसार को दिखाने का दावा तो नहीं करता लेकिन जो रास्ता लिये हुये है सम्भव है कि वह एक ऐसा रास्ता सारे संसार को दे जिसको आज हम न समझें लेकिन कल मानना पड़ेगा। उसमें तो फिर ऐसे लोगों की बड़ी भारी आवश्यकता है। जो इधर कुछ बैठकें हुईं, आप लोगों की बैठकें हुईं, उसकी भी प्रोसीडिंग कुछ जानने के बाद थोड़ी बहुत जानकारी जो कुछ हुई उससे हम ऐसा समझते हैं कि मावलंकर जी जो पार्लियामेंट के हमारे अध्यक्ष थे उन्हीं के लायक वह स्थान था। उस ओहदे पर, उस कुर्सी पर बैठ कर के अमर नाम है आज हमारे सरदार विट्ठल भाई पटेल का। उसी स्थान को मावलंकर जी ने सुशोभित किया था। मेरे मन में कभी-कभी यह बात आती थी कि जिस काम को हमारे वयोवृद्ध सरदार विट्ठल भाई पटेल ने किया उस काम को पूरा करने में मावलंकर जी पीछे नहीं मालूम होते। तो हमको कलेजे पर पत्थर रखकर के भी इन सारी चोटों को बर्दाश्त करना पड़ेगा। कितना कष्ट है हमें, अब इसको जबान से कहने में तो वह कष्ट ज़ाहिर नहीं होता है लेकिन जो कुछ भी माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा उन सारी बातों के साथ शेयर करते हुये मैं आपसे यह प्रार्थना करूंगा कि मावलंकर जी के परिवार को, उनके सगे सम्बन्धियों को, हमारी वेदना की सूचना आप कृपा करके कर दें।

***श्री अवधेश प्रतापसिंह** (जिला फैजाबाद)—मान्यवर, आज बहुत थोड़े दिन हुये जब कि भारत का एक महान पुत्र हमसे छिन गया और हम वह चोट भूल न पाये थे कि मृत्यु का एक दूसरा आघात हमारे ऊपर हुआ। श्रीमन्, यह जब कि सब जानते हैं कि मृत्यु एक ऐसी वस्तु है जिससे कोई छुटकारा नहीं पा सकता, शरीर नश्वर है, संसार नश्वर है, परन्तु दुःख के साथ श्रीमन्, यह कहना होता है कि हृदय जो है वह मानव का

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री अवधेश प्रताप सिंह]

है। हम सहन कर रहे हैं और सहन करते रहेंगे परन्तु किस क्लेश और किस दुःख के साथ यह बोझ हम उठा रहे हैं, यह आज पूरा भारत इसको समझ सकता है। मान्यवर, मावलंकर जी जहाँ विद्वान थे, स्वतन्त्रता संग्राम में सदैव अग्रसर रहे हैं और जिनकी बौद्धिक प्रतिमा आज भारत के सभी नागरिक जानते हैं ऐसा व्यक्ति जो अध्यक्ष पद से पार्लियामेंट का कार्य इस कुशलता से चला रहा हो कि सभी पार्टियों का उसमें भरोसा ही न हो बल्कि सब के अधिकारों की रक्षा में सदैव तत्पर और संलग्न रहा करते थे। यही नहीं, बल्कि मैं यह कहता हूं कि आज भारत का प्रत्येक नागरिक जो श्रद्धा, जो विश्वास, जो प्रेम उनके प्रति रखता है वह किसी भी व्यक्ति के लिये सराहनीय है। इस संसार से एक न एक दिन सभी को चलना होता है सब कुछ रहते हुये भी, संसार, परिवार, सुख, ऐश्वर्य, प्रतिभा इस संसार में जो कुछ बच जाता है वह केवल कीर्ति ही है और उन आत्माओं के पीछे जिनके पीछे यह कीर्ति हो उनको इस शरीर से छुटकारा पाते हुये भी हम जीवित समझते हैं और यह एक भरोसा है, संतोष है और सांत्वना के लिये एक मार्ग है जिसको अपना कर इस चोट को बर्दाश्त करने में हम समर्थ हो सकेंगे। यह कहा जाता है कि समय ही हीलर है। मुझे दुःख के साथ यह कहना होता है कि आज माननीय आचार्य नरेन्द्रदेव जी की मृत्यु के उपरान्त हमको इतना भी अवकाश न मिल पाया कि कम से कम एक चोट से हम संभल तो सकते और दूसरी चोट के लिये कुछ तैयार होते लेकिन उसके पहले ही हमको वह गहरी चोट लगी और ऐसे बेमौके लगी जिससे संभलना कठिन हो रहा है। मान्यवर, इस समय पर भावनाओं को व्यक्त करना कठिन हो रहा है। क्योंकि वक्तृत्व शक्ति भी इस समय साथ छोड़ देती है और साहस और धैर्य भी डगमगा जाता है। ईश्वर ही की अनुकम्पा और कृपा से हम अपने आप को सम्हाल सकते हैं।

श्रीमन, पार्लियामेंट के अध्यक्षपद से जो उनकी रूलिंग्स हुईं या आप लोगों की सभाओं में जिस कुशलता से उन्होंने नेतृत्व किया और उन कान्फ्रेंसेज़ को सफल बनाने में जो उन्होंने हाथ बटाया यह भारत के लिये एक गौरव की वस्तु है। इस पार्लियामेंटरी डिमोक्रेसी में हमको इतना अनुभव नहीं था लेकिन जिस रूप से, जिसमें आपका भी भाग रहा, उन्होंने उस व्यवस्था को हमारे सामने रखा है उससे यही नहीं कि हम लाभ उठायेंगे बल्कि आज हम गौरव के साथ सर ऊंचा कर के यह भी कह सकते हैं कि भारत में हमने इस दिशा में भी ऐसी उन्नति की है जो सराहनीय है और जिससे दूसरे भी लाभ उठा सकते हैं। मान्यवर, किसी भी शासन कुशलता के बारे में जैसा माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्षपद से जो कुछ उन्होंने किया उससे भी कहीं ज्यादा हम लोग यह देख रहे हैं कि भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त पार्लियामेंट के स्पीकर की हैसियत से उन्होंने जो कुछ किया वह ऐसी चीज़ है जिससे हम दिन-प्रति-दिन लाभ उठाते ही रहेंगे। और मैं अपने दल की ओर से आप से प्रार्थना करूंगा कि आप उनके दुखित परिवार को हमारी समवेदना पहुंचाने की कृपा करें। और ऐसे समय पर श्रीमन्, यह समवेदना उनको शान्ति विशेष भले ही न पहुंचा सके लेकिन फिर भी बहुत मात्रा में आशा है कि इससे हम यह समझेंगे कि उनको कुछ न कुछ तो अपनी जगह पर शान्ति मिलेगी ही। इन शब्दों से मैं अनुरोध करूंगा कि आप यह समवेदना उन तक और उनके दुखित परिवार तक पहुंचा देने की कृपा करें।

श्री रामनारायण त्रिपाठी (ज़िला फैज़ाबाद)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज

० बजकर २५ मिनट पर स्वयं आपके द्वारा जब यह मालूम हुआ कि मावलंकर जी इस असार संसार में नहीं रहे तो मैं स्तब्ध सा रह गया। आचार्य जी की मृत्यु के बाद से उनके बारे में मेरे मन में एक स्वभाविक शंका सी हो चली थी यद्यपि उसका कोई कारण नहीं था, लेकिन एक शंका होती थी कि यह हृदय रोग से पीड़ित हैं, कहीं ऐसा न हो कि उन जैसे रत्न से हमारा देश वंचित हो जाय। पिछले ३-४ वर्ष से हम देखते हैं कि अपने देश के प्रथम पीढ़ी के अग्रगन्य नेताओं में से एक-एक करके हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं और जहाँ आज हमें अभी हाल में स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और देश के निर्माण के लिये वयोवृद्ध नेता जिन्होंने ३५–४० वर्ष तक आजादी की लड़ाई में काम किया है और आजादी के बाद देश के निर्माण में सहयोग देते हैं, उनके निधन से शून्य सा उत्पन्न होता जाता है और कभी-कभी यह शंका होती है कि क्या इसकी कभी पूर्ति भी हो सकेगी ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे देश में संसदीय प्रणाली अभी शैशवावस्था में है और इस दिशा में मावलंकर जी की देन अद्वितीय है। अभी हमें इस क्षेत्र में बहुत सी परम्परायें कायम करनी हैं, नई-नई व्यवस्था प्रोसीजर वगैरा भी कायम करनी हैं और बहुत से इनएक्टमेंट करने हैं जिससे हमारे देश के मसले हल हो सकें। इस दिशा में उन्होंने पिछली लोक सभा के अध्यक्ष पद से जो प्रयत्न किया है वह सराहनीय है और वह लगातार इस प्रयत्न में थे। मैं देखता हूं कि उनके जीवन चरित्र से कि जहाँ भी वह रहे, उन्होंने जान तोड़ कर इस दिशा में कोशिश की, यही उनके जीवन की सफलता का रहस्य है। ऐसी दशा में संसदीय प्रणाली के उत्थान में उनके सहयोग से और देश के निर्माण में प्रगति हो रही थी उसकी वजह से उनके हमारे बीच में न रहने से देश को महान हानि हुई है। श्री मावलंकर जी किसी भी सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिये आदर्श रूप थे।

अध्यक्ष महोदय, मैं भी आप से अनुरोध करता हूं कि उनके परिवार के संतप्त लोगों को हम लोगों की ओर से हमारी समवेदना पहुंचाने की कृपा करें और उनको बतला दें कि यह केवल उनका शोक नहीं है बल्कि सारे देश का शोक है।

श्री झारखंडे राय (जिला आजमगढ़)—अध्यक्ष महोदय, इधर कई दिनों से लगातार माननीय मावलंकर जी के स्वास्थ्य के सुधरने की खबरें आती रही थीं और उनसे यह आशा होने लगी थी कि यद्यपि वह कठिन बीमारी से ग्रसित हैं फिर भी उनका स्वास्थ्य सुधरेगा और वह फिर हमारे बीच में सक्रिय रूप में आजायेंगे इसलिये आज जब भवन में यकायक आकर मुझे मालूम हुआ है कि वह हमारे बीच में अब नहीं रहे, मैं अवाक सा रह गया और सहसा कानों पर विश्वास नहीं हुआ। ऐसा लगता है, जैसा अन्य पूर्व वक्ताओं ने कहा कि आजादी की लड़ाई के प्रथम पीढ़ी और पांत के लोग एक-एक करके हमारे बीच से उठते जा रहे हैं। यह एक चेतावनी भी है नयी पीढ़ी वालों को, कि अब उनके कन्धों पर राष्ट्र के नव-निर्माण की अधिक जिम्मेदारी आ गई। जब कि बुजुर्गों की प्रेरणा और उनके पथ-प्रदर्शन की आशा अभी कुछ दिन के लिये और थी तभी अचानक एक-एक करके पुराने लोगों का उठते जाना राष्ट्र के लिये एक दुर्भाग्य सा ही हो रहा है। फिर भी मैं विश्वास करता हूं कि नई पीढ़ी दैव के इस दुर्विपाक का सहन शक्ति एवं धैर्य के साथ सामना करेगी और राष्ट्र को नव-निर्माण के, प्रगति के पथ पर बढ़ाते हुये पुरानी पीढ़ी के इन महारथियों और सेनानियों

[श्री झारखंडे राय]

की स्मृति से हमेशा एक प्रेरणा लेती रहेगी। यही प्रेरणा आज नई पीढ़ी के लोग उन दिवंगत महापुरुषों से ग्रहण कर सकते हैं।

मेरा उनसे प्रत्यक्ष तो कोई परिचय नहीं था लेकिन संसद के कुछ कम्युनिस्ट सदस्यों से बातचीत के सिलसिले में उनके बारे में कुछ जानने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। उनकी बात से ऐसा लगा कि माननीय मावलंकर जी संसदीय पद्धतियों का बड़ी कड़ाई से पालन करते थे। मैंने सोचा कि शायद एक नये राष्ट्र में, जो पार्लियामेंटरी पद्धति स्वीकार करता है, अपनी राष्ट्रीय और अपनी संस्कृति के अनुरूप नई पद्धतियों के निर्माण के लिये, उनकी रचना के लिये कुछ सख्ती जरूरी होती है और मैं समझता हूं कि माननीय मावलंकर जी ने उसी आधार पर, क्योंकि वे आजाद हिन्दुस्तान की प्रथम पार्लियामेंट के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुये थे, यह उनके लिये गौरव की, सब से बड़े गौरव की बात थी, तो उस स्थिति में रहते हुये, उन्होंने जिन प्रणालियों को अपनाया वह हमारे लिये अनुकरणीय होंगी भविष्य में, इसलिये कुछ सख्ती से उनका पालन करना भी उनके लिये अनिवार्य था। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि माननीय मावलंकर जी की मृत्यु उनके केवल परिवार के लिये ही शोक का विषय नहीं है बल्कि सारे राष्ट्र के लिये और सारे देश की जनता का शोक का विषय है और यही उनके परिवार वालों के लिये और उनके निकटतम परिजन सम्बन्धियों के लिये एक सांत्वना का विषय होगा। इन शब्दों के साथ मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप हमारी श्रद्धांजलि उनकी स्मृति को व्यक्त करते हुये, हमारी समवेदना उनके परिवार वालों तथा निकट सम्बन्धियों के पास भेजने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष—आदरणीय लोक सभा के अध्यक्ष, श्री मावलंकर जी के आकस्मिक निधन की खबर सुन कर हम सब को आज सबेरे बहुत जबरदस्त धक्का लगा और आश्चर्य भी हुआ और ऐसी अवस्था में हम किस प्रकार से अपना शोक प्रकट कर सकते हैं जब कि शोक से हृदय आहत हो।

जो भावनायें नेता सदन ने और नेता विरोधी दल और अन्य सदस्यों ने अभी व्यक्त की हैं और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये मावलंकर जी के विषय में उन्होंने जो शब्द कहे, उन सब के साथ में अपने को भी सम्बद्ध करता हूं।

मेरा मावलंकर जी से परिचय वैसे तो सन् १९२१ से ही थोड़ा बहुत रहा है लेकिन वह दूर से रहा। उनसे निकट का परिचय अभी कुछ वर्ष हुये आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में हुआ था। अहमदाबाद में गया था और उनके घर जाने के ऊपर उनसे प्रत्यक्ष परिचय हुआ। इसके पश्चात् पिछले चार वर्षों में जो प्रीसाइडिंग आफिसर्स कॉन्फ्रेंस हुई उनमें मुझे जाने का मौका मिला। उस समय पर प्रत्यक्ष निकटतम उनसे सम्बन्ध और परिचय हुआ। मैं यह कह सकता हूं कि जब कभी भी अपने यहाँ के पार्लियामेंट के सम्बन्ध में और पार्लियामेंटरी पद्धति के सम्बन्ध में इतिहास लिखा जायगा और कहा जायगा कि देश में यह प्रजातन्त्र पद्धति बड़ी सफलता पूर्वक क्यों कर चली, तो सब से बड़ा श्रेय इतिहास श्री मावलंकर जी को देगा। वह जिस वक्त पहले पहल केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष हुये उस वक्त से उन्होंने श्री विट्ठल भाई पटेल जी का आदर्श अपने सामने रखा और उन जैसी निर्भीकता दिखाई। श्री विट्ठल भाई पटेल की अध्यक्षता के बाद से जब कभी वायसराय साहब का अभिभाषण होता था तो असेम्बली के स्पीकर को डाइस के नीचे बैठाया जाता था। लार्ड बेलिंग्डन के समय से अभिभाषण के समय

यही रिवाज पड़ गया था। श्री मावलंकर जी के अध्यक्ष होते ही जब वाइसराय का प्रथम भाषण होना था तो उन्होंने इस बात को लिख कर भेज दिया कि मैं व्यक्तिगत कोई महत्व नहीं रखता हूं लेकिन अध्यक्ष यहां की केन्द्रीय सभा का हूं, उसके स्पीकर के नाते मैं यह समझता हूं कि यह इस सभा का अपमान है कि इस तरह से स्पीकर को डाइस के नीचे बैठाया जाय। इसका परिणाम यह हुआ कि तत्काल ही यह आज्ञा निकाली गई कि उनको वाइसराय की दहिनी तरफ बैठाया जाय। तब वह उस भवन में आये। मैंने एक छोटा सा उदाहरण उनकी निर्भीकता और सदन की प्रतिष्ठा का जो उन्हें खयाल था उसके सम्बन्ध में उस समय का दिया है लेकिन जो परम्परा पार्लियामेंटरी पद्धति के सम्बन्ध में वह कायम करना चाहते थे और कर गये वह स्वतन्त्रता के बाद ही विशेष कर बहुत महत्व की सिद्ध हुई। वह कहते थे कि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी पद्धति की जो आत्मा है उसको तो हम स्वीकार करते हैं, उस पद्धति के मौलिक सिद्धांत को स्वीकार करते हैं लेकिन हम उसका जो बाहरी रूप है, या फार्म्स हैं उससे बन्धे हुये नहीं हैं। इस देश में हमारी परिस्थिति के अनुसार हमें स्वस्थ परम्परा कायम करनी पड़ेगी, फार्म्स कायम करने पड़ेंगे और उन पद्धतियों में अगर कोई त्रुटि है तो उसको दूर करना होगा। नई परम्परायें जो ब्रिटिश पार्लियामेंटरी पद्धति में भी नहीं हैं उनको भी कायम करना पड़ेगा और इसी उद्देश्य से उन्होंने इस बात पर सदैव महत्व दिया था कि ब्रिटिश कामन वेल्थ पार्लियामेंटरी ऐसोसियेशन के सदस्य भी हमारी सब विधान सभाओं के सदस्यों को हो जाना चाहिये जिसमें हम उनके अनुभव से कुछ लाभ उठायें और साथ ही हमारे अनुभवों का फायदा हम उनको दे सकें और उनकी पार्लियामेंटरी पद्धति में भी सुधार कर सकें।

मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि उन्होंने कामन वेल्थ पार्लियामेंटरी ऐसोसियेशन में जाकर भारतवर्ष का कितना गौरव बढ़ाया था। हमें खुशी अधिक इस बात की है कि इस वर्ष वह इस पार्लियामेंटरी ऐसोसियेशन के अध्यक्ष भी एक साल के लिये चुने गये थे। प्रथम बार हमारे देश को यह गौरव तथा सौभाग्य प्राप्त हुआ है और वह केवल श्री मावलंकर जी के व्यक्तित्व के कारण। पार्लियामेंटरी पद्धति के कार्य के सम्बन्ध में उनकी कार्यशैली यह रही है कि स्पीकर का कार्य उन्होंने बिलकुल निश्पक्ष रूप से चलाया। वे अपना यह कर्तव्य समझते थे कि सदन की जो सामूहिक विचारधारा है उसे तत्काल पहले से समझ लें और सदस्यों के भाषण शुरू करते ही उनकी भावनाओं को, जो उचित भावनायें हैं उनको, प्रोत्साहन देकर उन्हें सफल बनाने के लिये उद्यत रहना चाहिये। उनका यह मत था कि यदि लोक तन्त्र की पद्धति सफल होनी है तो जनता की सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने वाले सदस्य, चाहे वे थोड़ी संख्या में क्यों न हों, लेकिन वे उन्हें समझ कर उनकी सच्ची शुद्ध भावनाओं को व्यक्त करने का मौका अध्यक्ष दे। उनमें यह विलक्षण कला थी जिसके सम्बन्ध में मैं आपसे कहता हूं कि स्पीकर्स कान्फ्रेंन्स में भी हमने देखा कि जो कुछ हम लोग कहने वाले होते थे वह हमारे एक ही वाक्य से समझ लेते थे और फौरन कह देते थे कि यह चीज़ आप कहने वाले हैं, मैं इसका उत्तर दिये देता हूं। इसी कारण केवल दो-तीन दिन ही स्पीकर्स कान्फ्रेंन्स होती रही है अगर बहुत वाद-विवाद चलता तो आठ-आठ दिन तक उन विषयों पर कान्फ्रेन्स हो सकती थी लेकिन समय बचाने के लिये वे ऐसा करते थे। जो व्यक्ति स्पीकर्स के बीच में उनकी भावनाओं को इतनी शीघ्र समझ ले वह सदन के सदस्यों की भावनाओं को तो आसानी से समझ सकता था। यही कारण है कि उन का लोक सभा के साथ तादात्म्य रहा और उन्होंने पार्लियामेंट की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये जो प्रयत्न किये वे अद्वितीय रहे हैं। वह कभी शासन के साथ टकराते नहीं थे। उनका केवल एक अस्त्र था और वह था तर्कशुद्धता और सत्यनिष्ठा। यही गाँधी जी से उन्होंने सीखा

[श्री अध्यक्ष]

था। वह कहते थे कि यदि मैं अकेला भी हूं परन्तु मेरे तर्क में यदि अशुद्धता नहीं है और सच्चे हैं तो यद्यपि मेरे शब्द बहुत सौम्य हैं तो भी दूसरे के हृदय में प्रवेश कर ही जावेंगे और दूसरे के हृदय का परिवर्तन कर ही लेंगे। यही कारण है कि प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल जी और उनके बीच में ऐसा सामन्जस्य रहा कि कभी एक दूसरे के विचारों में अन्तर नहीं हुआ और अगर कभी पड़ा है तो उन्होंने लिख पढ़ कर आपस में चर्चा करके सभी मसले हल किये हैं। लोक सभा की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये पहला कार्य उन्होंने यह किया था कि सचिवालय लोक सभा का स्वतन्त्र हो क्योंकि वे समझते थे कि ऐसा होने से ही सब पार्टियों के सदस्यों के लिये सचिवालय समदर्शी रह कर सहायक हो सकता है। इस लिये उसके स्वातन्त्र्य के लिये उन्होंने प्रयत्न किया और इस कार्य को पूरा करा लिया। उनका यह भी प्रयत्न था कि हर एक विधान सभा का सचिवालय लोक सभा सचिवालय की तरह स्वतन्त्र रहे। इसके अतिरिक्त लोगों के जो चुने हुये नुमाइन्दे सदन में आते हैं उनका नियन्त्रण शासन पर रहे, इसको मूर्त रूप देते हुये उन्होंने कई कमेटियों को स्थापित किया। मैं आपको यह बताना चाहता था कि एक ऐसी प्रथा उन्होंने कायम की जो ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी आप को नहीं मिलेगी। एस्टीमेट्स कमेटी से तो आप परिचित होंगे लेकिन उसके बाद आश्वासन समिति जो आपने कायम की यह एक नई चीज़ है। यह उनकी ही सूझ बूझ से लोक सभा और हमारे सदन में कायम हुई है। इसके अतिरिक्त डेलीगेटेड लेजिस्लेशन के सम्बन्ध में नियत्रंण करने के लिये एक कमेटी लोक सभा में कायम की गई है। इन सब सुधारों के लिये उनका पत्र-व्यवहार हर विधान सभा के साथ हुआ करता था जिससे कि एक सी परम्परा सब प्रदेशों में और सारे देश में कायम हो और सच्चे अर्थ में पार्लियामेंटरी पद्धति सफल हो सके। उनका प्रयत्न था कि पार्लियामेंट और विधान सभाओं की शक्ति ऐसी जबरदस्त हो कि कोई भी सरकार क्यों न हो उक्त सदनों के नियन्त्रण से छुटकारा न पा सके और इसे सदैव यह ध्यान रहे कि हमको सदैव सदन की आवाज को पूरा-पूरा महत्व देना होगा नहीं तो एक रोज भी सरकार कायम न रह सकेगी। उनका यह भी प्रयत्न था कि सदन को भी जनता की आवाज़ का, जनता की भावनाओं का और जनता के विचारों का प्रतीक बना दें। यही उनके सिद्धान्त थे जिनके लिये वे प्रयत्नशील रहे।

अभी-अभी उनके निधन से पहले ही उन्होंने एक आर्टिकिल "ग्रोथ आफ पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी" के नाम से दिया है। उसमें, किस तरह से इन्डायरेक्टली शासन की नीतियों, यहां तक कि पर-राष्ट्रनीतियों पर भी स्पीकर का असर हुआ करता है, यह उन्होंने बताया है। उन्होंने अपना आर्टिकिल "दि आफिस आफ दि स्पीकर" हेरल्ड लास्की इंस्टीट्यूट आफ पोलीटीकल साईन्स अहमदाबाद को दिया था। आप समझ सकते हैं कि स्पीकर के पद को वे कितना समुन्नत देखना चाहते थे जो पद कि ब्रिटिश पार्लियामेंटरी पद्धति में अभी तक किसी को नहीं मिला है। इसलिये मैं कहता हूं कि इतिहास में यह चीज़ें हम को हमेशा याद आयेंगी क्योंकि पार्लियामेंटरी पद्धति एक ऐसी कठिन पद्धति है कि साधारणतया हर जगह उसमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। आप देखते हैं कि यह पद्धति इंगलैंड में सफल हुई लेकिन कांटिनैंट में यानी योरोप के अन्य देशों में वह सफल नहीं होती और परिस्थिति के अनुसार उन देशों को अपने यहाँ दूसरी पद्धतियां अपनानी पड़ी हैं। फ्रान्स में आप देखते होंगे कि शायद हर हफ्ते एक गवर्नमेंट बदल जाती है। तो ऐसी कठिन पद्धति को हमें यहां ६ हजार मील की दूरी पर सफल बनाने के लिये बहुत सजग रह कर

कार्य करना है और विशेषकर जो हमारी केन्द्रीय लोक सभा है उसके अध्यक्ष के लिये तो वह कार्य और भी कठिन हो जाता है क्योंकि देश की सभी विधान सभायें उसका अनुकरण करती हैं और इस कारण उसकी जिम्मेदारी भी अधिक होती है तो ऐसे कठिन कर्तव्य का उन्होंने सफलता पूर्वक पालन किया है। सभी दलों के सदस्य जिस अध्यक्ष पर पूर्ण विश्वास करते हों ऐसा व्यक्ति आज हमारे बीच से चला गया, उसके जाने से हम सब को बहुत दुख होना स्वाभाविक है। देश की जो हानि उनके जाने से हुई है उसकी पूर्ति करना अब बहुत कठिन हो गया है। लेकिन मैं तो आशावादी होने के नाते आशा करता हूं कि वह जो लीक डाल गये हैं उसी पर यदि हम चलते रहेंगे तो इस पद्धति की सफलता में मुझे तनिक भी शंका नहीं। वह तो सफल हो कर रहेगी ही। यदि हम उनके आदर्शों का अनुसरण करेंगे तो हमारे ही बीच से ऐसे लोग उत्पन्न होंगे जो इस पद्धति को सफल बना कर, उसका विकास करके अपने देश और संसार का नेतृत्व करने में समर्थ होंगे। जो भावनायें यहाँ प्रकट की गई हैं मैं उनसे अपने को फिर से सम्बद्ध करता हूं और उनके कुटुम्बियों तक आपकी समवेदना पहुंचा दूंगा। अब मैं सदन से प्रार्थना करूंगा कि दो मिनट के लिये खड़े होकर उनकी आत्मा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

(इसके उपरान्त सब सदस्यों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति ईश्वर के ध्यान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की।)

श्री अध्यक्ष---अब हम उठते हैं और कल ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ५४ मिनट पर, अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

मिटठनलाल,
सचिव, विधान मन्डल,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ:
२७ फरवरी, १९५६।

PSUP L. 475 L. A.—10-5-56—800